रब्बी और सद्गुरु

सिन्धू पोर्टर द्वारा पुनर्लिखित

यह कहानी शनिवार ४ जुलाई, २०२० को गुरुपूर्णिमा के सम्मान में आयोजित 'मन्दिर में रहो' सत्संग के दौरान सुनाई गई थी।

जेकब यिटज़ैक निस्सन्देह एक ऐसे युवक थे जो भगवान को जानने के लिए दृढ़संकल्पित थे। वे टाल्मुड [यहूदियों का एक धर्मग्रन्थ] की सिखावनियों पर मनन करते हुए, उस पुस्तक के साथ कई-कई दिनों तक लगातार समय बिताया करते। तथापि, वे निश्चित तौर पर यह जानते थे कि दिव्य प्रभा का वास्तविक अनुभव वे तभी कर पाएँगे जब उन्हें एक गुरु मिल जाएँगे, एक आत्मज्ञानी गुरु जो उनका मार्गदर्शन कर सकें। ऐसे धधकते हृदय से जेकब, रब्बी एलिमीलेख़ [यहूदी धर्म में आध्यात्मिक या धार्मिक गुरु को रब्बी कहा जाता है] से ज्ञान प्राप्त करने के लिए निकल पड़े जो अपने ज्ञान और करुणा के लिए सुप्रसिद्ध थे।

अपनी यात्रा के दौरान जेकब का सबसे पहला पड़ाव था अगोनिया नाम का एक छोटा-सा नगर। वहाँ रहते हुए, उन्हें वहाँ के स्थानीय रब्बी [केवल किसी विशिष्ट स्थान के धार्मिक शिक्षक] के घर पर रात्रिभोज का न्योता मिला। वहाँ पहले से ही टाल्मुड और ज़ोहार [यहूदियों का एक धर्मग्रन्थ] पर पुरजोश चर्चा चल रही थी। जब मेहमान बोल रहे थे तब जेकब, रब्बी की तीव्र बुद्धि से बहुत अधिक प्रभावित होने लगे। उन्हें लगा कि निश्चय ही इन युवा प्रतिभाशाली रब्बी ने किसी महान गुरु से ज्ञान प्राप्त किया होगा। लेकिन जेकब को तब बहुत अचम्भा हुआ, जब उन रब्बी तावी ने यह बताया कि वे अध्ययन के लिए कभी किसी ज़ाद्दिक यानी सद्गुरु के पास गए ही नहीं।

फिर भी, जेकब ने उन रब्बी को बताया कि वे महान रब्बी एलिमीलेख़ से मिलने जा रहे हैं और रब्बी तावी को भी अपने साथ चलने के लिए आमन्त्रित किया। पहले तो रब्बी तावी ने अपने कन्धे उचकाकर आनाकानी की और अरुचि दर्शाई, परन्तु अन्ततः साथ चलने को राज़ी हो गए।

अगले दिन सूर्यास्त से ठीक पहले वे दोनों, ज्ञानी रब्बी एलिमीलेख़ के घर पहुँच गए। जब वे दोनों उनके सामने आए तो रब्बी एलिमीलेख़ ने पहले जेकब की ओर देखा, फिर रब्बी तावी की ओर,

और वहाँ से चले गए। जेकब को हैरत तो हुई, पर उन्हें महसूस हुआ कि उनके गुरु की उपेक्षा का कारण उनका साथी हो सकता है।

बाद में जेकब दोबारा वहाँ अकेले आए और तब उनके गुरु ने उनका गर्मजोशी से स्वागत किया। उन्होंने रब्बी एलिमीलेख़ से पूछा कि वे रब्बी तावी को देखते ही एकदम से चले क्यों गए और तब उनके गुरु ने उत्तर दिया :

"कभी-कभी, भले ही व्यक्ति भगवान की सेवा करना शुरू तो करता है, फिर भी अहंकार चुपके-से आकर उसकी सेवा में शामिल हो जाता है। हालाँकि वह बहुत जोश से इस यात्रा पर निकलता है, पर अहंकार घात लगाए रहता है और उसकी सेवा को कुन्द कर देता है। अहंकार, परम सत्य की धधकती ज्वाला में अर्पित गीली लकड़ियों की भाँति है—और भगवान के सच्चे जिज्ञासु को हर क़ीमत पर अहंकार से मुक्त होने के लिए नियमित और सुदृढ़ प्रयत्न करना आवश्यक है।"

जेकब को समझ आया कि रब्बी तावी ने कभी किसी गुरु को क्यों नहीं खोजा, क्योंकि वे अपने ही अहंकार से ग्रस्त थे। बाद में जेकब ने अपने गुरु के शब्द जब रब्बी तावी को बताए, तो रब्बी तावी ने उन शब्दों में देदीप्यमान सत्य को पहचान लिया। उसी क्षण उनका मन भगवान की ओर उन्मुख हो गया और वे रोते-रोते दौड़कर अपने गुरु के पास पहुँचे। रब्बी एलिमीलेख़ ने उन्हें गले से लगा लिया। आख़िरकार, रब्बी तावी को सही राह मिल गई।

©२०२० एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।